

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 9, September 2015

शिक्षण द्वारा सीखना

डॉ० राम सरदार

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक-शिक्षा विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या (उ.प्र.)

सार

अध्यापन के क्षेत्र में, शिक्षण द्वारा सीखना, शिक्षण का एक तरीका है जिसमें छात्रों को सामग्री सीखने और अन्य छात्रों को पढ़ाने के लिए पाठ तैयार करने के लिए बनाया जाता है। विषय वस्तु के साथ-साथ जीवन कौशल के अधिग्रहण पर जोर दिया जाता है। इस पद्धति को मूल रूप से 1980 के दशक में जीन-पोल मार्टिन द्वारा परिभाषित किया गया था।

छात्रों को अन्य छात्रों को पढ़ाने की पद्धति प्राचीन काल से मौजूद है। अक्सर यह संसाधनों की कमी के कारण होता था। उदाहरण के लिए, निगरानी प्रणाली एक शिक्षा पद्धति थी जो 19वीं शताब्दी की शुरुआत में वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय हो गई थी। इसे मद्रास में काम करने वाले स्कॉट्समैन एंड्रयू बेल और लंदन में काम करने वाले जोसेफ लैकेस्टर द्वारा समानांतर में विकसित किया गया था; प्रत्येक ने कम संसाधनों वाले गरीब बच्चों को शिक्षित करने का प्रयास किया और बड़े बच्चों को छोटे बच्चों को वही पढ़ाया जो उन्होंने पहले ही सीखा था।

20वीं सदी के मध्य में छात्रों को अध्यापन द्वारा सीखने के द्वारा जानबूझकर शिक्षा में सुधार लाने के लिए व्यवस्थित अनुसंधान शुरू हुआ। 1980 के दशक की शुरुआत में, जीन-पोल मार्टिन ने व्यवस्थित रूप से छात्रों को एक विदेशी भाषा के रूप में फ्रेंच सीखने के संदर्भ में अन्य लोगों को पढ़ाने की अवधारणा विकसित की, और उन्होंने इसे कई प्रकाशनों में एक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि दी। मूल रूप से इस पद्धति का विरोध किया गया था, क्योंकि जर्मन शिक्षा प्रणाली में आमतौर पर अनुशासन और रटने पर जोर दिया जाता था। हालाँकि जर्मनी में माध्यमिक शिक्षा में इस पद्धति का व्यापक रूप से उपयोग किया जाने लगा, और 1990 के दशक में इसे और औपचारिक रूप दिया गया और विश्वविद्यालयों में भी इसका उपयोग किया जाने लगा। 2008 तक मार्टिन सेवानिवृत्त हो चुके थे, और हालाँकि वे सक्रिय रहे, जो आचिम ग्रेज़ेगा ने एलडीएल के विकास और प्रचार में अग्रणी भूमिका निभाई।

परिचय

शिक्षक द्वारा तैयारी के बाद, छात्र अपने सीखने और पढ़ाने के लिए खुद जिम्मेदार हो जाते हैं। नई सामग्री को छोटी इकाइयों में विभाजित किया जाता है और तीन से अधिक लोगों के छात्र समूह नहीं बनते हैं। [1]

फिर छात्रों को दूसरों को सामग्री सिखाने के तरीके खोजने के लिए प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह सुनिश्चित करने के साथ कि छात्र सामग्री सीखते हैं, विधि का एक अन्य लक्ष्य छात्रों को जीवन कौशल जैसे अन्य लोगों के लिए सम्मान, योजना बनाना, समस्या को हल करना, सार्वजनिक रूप से मौके लेना और संचार कौशल सिखाना है। [7] [8] [9] [10] शिक्षक सक्रिय रूप से शामिल रहता है, आगे की व्याख्या करने या सहायता प्रदान करने के लिए आगे बढ़ता है यदि शिक्षण-छात्र लड़खड़ाते हैं या सीखने वाले-छात्र सामग्री को समझ नहीं पाते हैं। [1]

यह विधि शिक्षण से अलग है क्योंकि एलडीएल कक्षा में किया जाता है, शिक्षक द्वारा समर्थित है, और छात्र शिक्षण से अलग है, जो शिक्षक शिक्षा का एक हिस्सा है। [4]

एक संबंधित विधि प्लास्टिक प्लैटिपस लर्निंग या प्लैटिपस लर्निंग तकनीक है। यह तकनीक सबूतों पर आधारित है जो दर्शाती है कि एक निर्जीव वस्तु को पढ़ाने से किसी विषय की समझ और ज्ञान प्रतिधारण में सुधार होता है। [11] [12] [13] इस तकनीक का लाभ यह है कि विषय को पढ़ाने के लिए शिक्षार्थी को किसी अन्य व्यक्ति की उपस्थिति की आवश्यकता नहीं होती है। [10]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 9, September 2015

नाम 'प्लास्टिक प्लैटिपस लर्निंग' ज्ञात सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग तकनीक रबर डक डिबिंगिंग पर एक पैराफ्रेश है , जिसमें एक प्रोग्रामर दूसरों की मदद के बिना अपने कोड में बग ढूँढ सकता है, बस यह समझाकर कि कोड क्या करता है, लाइन से लाइन, एक को निर्जीव वस्तु - अर्थात्, एक रबर बतख। [14] जाहिर है, यह तकनीक किसी भी निर्जीव वस्तु के साथ काम कर सकती है, न कि केवल प्लास्टिक प्लैटिपस के साथ।

प्लैटिपस सीखने की तकनीक का एक रूप फेनमैन तकनीक है , जिसमें एक व्यक्ति एक बच्चे को जानकारी की व्याख्या करने का दिखावा करता है। [15]

पारंपरिक प्रशिक्षक शिक्षण शैली की कक्षाओं को फ्लिप शिक्षण के साथ मिश्रित या परिवर्तित किया जा सकता है। प्रत्येक (पारंपरिक / फ्लिप) व्याख्यान से पहले और बाद में, निरंतर निगरानी/डैशबोर्डिंग के लिए छात्रों से लिंकट पैमाने पर अज्ञात मूल्यांकन आइटम रिकॉर्ड किए जा सकते हैं। नियोजित फ्लिप शिक्षण पाठों में, शिक्षक छात्रों को वार्ता तैयार करने के लिए पाठ निर्धारित होने से एक सप्ताह पहले पाठ शिक्षण सामग्री सौंपता है। छोटे छात्र समूह होमवर्क के बजाय व्याख्यान अध्यायों पर काम करते हैं, और फिर अपने साथियों के सामने व्याख्यान देते हैं। पेशेवर व्याख्याता तब समूह वार्ता के अंत में चर्चा, पूरक और प्रतिक्रिया प्रदान करता है। यहां, पेशेवर व्याख्याता छात्रों की तैयारी और लाइव प्रदर्शन में मदद करने के लिए एक कोच के रूप में कार्य करता है। [16]

सक्रिय शिक्षण "सीखने का एक तरीका है जिसमें छात्र सक्रिय रूप से या अनुभवात्मक रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं और जहां छात्र की भागीदारी के आधार पर सक्रिय सीखने के विभिन्न स्तर होते हैं।" [1] बोनवेल एंड ईसन (1991) कहता है कि "छात्र निष्क्रिय रूप से सुनने के अलावा कुछ कर रहे होते हैं [सक्रिय सीखने में] भाग लेते हैं।" [11]" एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ हायर एजुकेशन (एएसएचई) की एक रिपोर्ट में, लेखक सक्रिय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न तरीकों पर चर्चा करते हैं। वे साहित्य का हवाला देते हैं जो इंगित करता है कि सीखने के लिए छात्रों को सिर्फ सुनने से ज्यादा कुछ करना चाहिए। उन्हें पढ़ना, लिखना, चर्चा करना और समस्याओं को हल करने में लगे रहना चाहिए। यह प्रक्रिया ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण (केएसए) के रूप में संदर्भित तीन शिक्षण डोमेन से संबंधित है। सीखने के व्यवहार के इस वर्गीकरण को "सीखने की प्रक्रिया के लक्ष्य" के रूप में माना जा सकता है। [2] विशेष रूप से, छात्रों को विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन जैसे उच्च-क्रम के सोच कार्यों में संलग्न होना चाहिए। [3]

समझ और स्मृति दोनों को बढ़ावा देने में सक्रिय शिक्षण को शिक्षाओं से बेहतर दिखाया गया है। [12] इसके इतने प्रभावी होने का कारण यह है कि यह सीखने के दौरान मस्तिष्क के संचालन की अंतर्निहित विशेषताओं पर आधारित है। इन विशेषताओं को हजारों अनुभवजन्य अध्ययनों (जैसे, स्मिथ एंड कोसलिन, 2011) द्वारा प्रलेखित किया गया है और सिद्धांतों के एक समूह में व्यवस्थित किया गया है। इन सिद्धांतों में से प्रत्येक को विभिन्न सक्रिय शिक्षण अभ्यासों द्वारा तैयार किया जा सकता है। सीखने और स्मृति पर अनुभवजन्य साहित्य को व्यवस्थित करने का एक तरीका 16 अलग-अलग सिद्धांतों को निर्दिष्ट करता है, जो दो छत्र "अधिकतम" के अंतर्गत आते हैं। पहली कहावत, "थिक इट थू", में निकट ध्यान देने और नई जानकारी के बारे में गहराई से सोचने से संबंधित सिद्धांत शामिल हैं। दूसरा, "मेक एंड यूज एसोसिएशन", सूचनाओं को व्यवस्थित करने, संग्रहीत करने और पुनर्प्राप्त करने की तकनीकों पर केंद्रित है। [12]

विचार - विमर्श

बोनवेल और ईसन (1991) ने सुझाव दिया कि शिक्षार्थी सहयोगात्मक रूप से काम करें, भूमिका निभाते समय सामग्री पर चर्चा करें , वाद-विवाद करें, केस स्टडी में संलग्न हों , सहकारी शिक्षण में भाग लें , या संक्षिप्त लिखित अभ्यास करें, आदि। तर्क यह है कि "सक्रिय शिक्षण अभ्यासों का उपयोग कब किया जाना चाहिए निर्देश के दौरान?"। कई अध्ययनों से पता चला है कि सक्रिय शिक्षण गतिविधियों (जैसे सिमुलेशन, गेम, कॉन्ट्रास्टिंग केस, लैब, ..) को व्याख्यान या रीडिंग के बाद शुरू करने से पहले, गहन सीखने , समझ और स्थानांतरण में परिणाम होता है। [1,2]

एक कक्षा चर्चा व्यक्तिगत रूप से या ऑनलाइन वातावरण में आयोजित की जा सकती है। चर्चा किसी भी वर्ग आकार के साथ आयोजित की जा सकती है, हालांकि यह आमतौर पर छोटे समूह सेटिंग्स में अधिक प्रभावी होती है। यह वातावरण सीखने के अनुभव के प्रशिक्षक मार्गदर्शन के लिए अनुमति देता है। चर्चा के लिए शिक्षार्थियों को विषय वस्तु पर गंभीर रूप से सोचने और तर्क का उपयोग करने के लिए अपनी और दूसरों की स्थिति का मूल्यांकन करने की आवश्यकता होती है। चूंकि शिक्षार्थियों से रचनात्मक और

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 9, September 2015

बुद्धिमानी से सामग्री पर चर्चा करने की अपेक्षा की जाती है, इसलिए चर्चा एक अच्छी अनुवर्ती गतिविधि है, क्योंकि इकाई को पहले ही पर्याप्त रूप से कवर किया जा चुका है। [2] सीखने की विधि के रूप में चर्चा का उपयोग करने के कुछ लाभ यह हैं कि यह छात्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों का पता लगाने में मदद करता है, यह बौद्धिक चपलता को बढ़ाता है, यह छात्रों की आवाज़ और अनुभवों के प्रति सम्मान दिखाता है, यह सहयोगी सीखने की आदतों को विकसित करता है, यह छात्रों को कौशल विकसित करने में मदद करता है। संश्लेषण और एकीकरण का [3] इसके अलावा, शिक्षक के सक्रिय रूप से छात्रों के साथ जुड़ने से, यह उन्हें कक्षा में बेहतर तरीके से तैयार होने और कक्षा में क्या हो रहा है, इसके बारे में जागरूक होने की अनुमति देता है। [13]

मल्टीमीडिया और प्रौद्योगिकी उपकरणों का उपयोग कक्षा के वातावरण को बढ़ाने में मदद करता है, इस प्रकार सक्रिय सीखने के अनुभव को बढ़ाता है। इस प्रकार, प्रत्येक छात्र सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होता है। सक्रिय सीखने की प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए शिक्षक फिल्मों, वीडियो, गेम और अन्य मजेदार गतिविधियों का उपयोग कर सकते हैं। इस सीखने की प्रक्रिया की सैद्धांतिक नींव हैं:

1. प्रवाह : प्रवाह छात्र के फोकस स्तर को बढ़ाने के लिए एक अवधारणा है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जागरूक हो जाता है और सीखने के माहौल में पूरी तरह से शामिल हो जाता है। स्वयं की क्षमता और क्षमता के अनुसार, आत्म-जागरूकता के माध्यम से, छात्र कार्य को हाथ में लेते हैं। प्रवाह को मापने की पहली पद्धति सिक्सजेंटमिहाली का अनुभव नमूनाकरण (ईएसएम) थी।
2. सीखने की शैली : अपनी तकनीक से ज्ञान अर्जित करना सीखने की शैली कहलाती है। सीखना क्षमता के अनुसार होता है क्योंकि प्रत्येक बच्चा अलग होता है और विभिन्न क्षेत्रों में विशेष क्षमता रखता है। यह सभी प्रकार के शिक्षार्थियों को पूरा करता है: दृश्य, रिश्तेदार-सौंदर्य, संज्ञानात्मक और प्रभावशाली।
3. नियंत्रण का स्थान: उच्च आंतरिक नियंत्रण वाले लोग मानते हैं कि प्रत्येक स्थिति या घटना उनके संसाधनों और व्यवहार के कारण होती है। उच्च बाहरी नियंत्रण वाले लोगों का मानना है कि उनके नियंत्रण में कुछ भी नहीं है।
4. आंतरिक प्रेरणा : आंतरिक प्रेरणा एक ऐसा कारक है जो हाथ में कार्य के संबंध में आत्म-धारणा से संबंधित है। रुचि, दृष्टिकोण और परिणाम दी गई गतिविधि की आत्म-धारणा पर निर्भर करते हैं

2012 में "एंजेज टू एक्सेल" शीर्षक वाली एक रिपोर्ट में, यूनाइटेड स्टेट्स प्रेसिडेंट्स काउंसिल ऑफ एडवाइजर्स ऑन साइंस एंड टेक्नोलॉजी (पीसीएएसटी) ने बताया कि कैसे सक्रिय शिक्षण में छात्रों को शामिल करने सहित शिक्षण विधियों में सुधार, छात्र प्रतिधारण को बढ़ाएगा और एसटीईएम में प्रदर्शन में सुधार करेगा। पाठ्यक्रम। रिपोर्ट में वर्णित एक अध्ययन में पाया गया कि पारंपरिक व्याख्यान पाठ्यक्रमों में छात्रों के इंजीनियरिंग छोड़ने की संभावना दोगुनी थी और सक्रिय शिक्षण तकनीकों का उपयोग करने वाले छात्रों की तुलना में पूरी तरह से कॉलेज छोड़ने की संभावना तीन गुना थी। एक अन्य उद्धृत अध्ययन में, एक भौतिकी वर्ग के छात्र जो सक्रिय शिक्षण विधियों का उपयोग करते थे, उन्होंने पारंपरिक कक्षा में पढ़ाए जाने वाले लोगों की तुलना में दोगुना सीखा, जैसा कि परीक्षण के परिणामों से मापा जाता है। [14]

बड़े व्याख्यान में सक्रिय शिक्षण को लागू किया गया है और यह दिखाया गया है कि घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों छात्र कई प्रकार के लाभों का अनुभव करते हैं। हाल के एक अध्ययन में, अंतरराष्ट्रीय छात्रों के बीच छात्र जुड़ाव और इकाई सामग्री की समझ में व्यापक सुधार दिखाया गया। [4,5]

परिणाम

यह भी दिखाया गया है कि सक्रिय शिक्षण दृष्टिकोण छात्रों और शिक्षकों के बीच संपर्क को दो तिहाई तक कम करते हैं, जबकि सीखने के परिणाम कम से कम अच्छे थे, और एक मामले में पारंपरिक कक्षाओं में हासिल की तुलना में काफी बेहतर थे। इसके अतिरिक्त, छात्रों की उनके सीखने की धारणा में सुधार हुआ और भौतिक स्थान के अधिक कुशल उपयोग के लिए सक्रिय शिक्षण कक्षाओं का प्रदर्शन किया गया। [15]

सीखने का सिद्धांत बताता है कि सीखने के दौरान छात्र कैसे ज्ञान प्राप्त करते हैं, प्रक्रिया करते हैं और कैसे बनाए रखते हैं। संज्ञानात्मक, भावनात्मक और पर्यावरणीय प्रभाव, साथ ही साथ पूर्व अनुभव, सभी समझ, या एक विश्व दृष्टिकोण को कैसे प्राप्त या परिवर्तित किया जाता है और ज्ञान और कौशल को बनाए रखने में एक भूमिका निभाते हैं। [8,9]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 9, September 2015

व्यवहारवादी सीखने को कंडीशनिंग के एक पहलू के रूप में देखते हैं और शिक्षा में पुरस्कार और लक्ष्य की एक प्रणाली की वकालत करते हैं। संज्ञानात्मक सिद्धांत को अपनाने वाले शिक्षकों का मानना है कि व्यवहार में बदलाव के रूप में सीखने की परिभाषा बहुत संकीर्ण है, और शिक्षार्थी का अध्ययन उनके पर्यावरण के बजाय - और विशेष रूप से मानव स्मृति की जटिलताओं से होता है। जो लोग रचनावाद की वकालत करते हैं, उनका मानना है कि सीखने वाले की सीखने की क्षमता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि वे पहले से क्या जानते और समझते हैं, और ज्ञान का अधिग्रहण निर्माण की एक व्यक्तिगत रूप से तैयार की गई प्रक्रिया होनी चाहिए। परिवर्तनकारी शिक्षासिद्धांत एक शिक्षार्थी की पूर्व धारणाओं और विश्व दृष्टिकोण में आवश्यक अक्सर आवश्यक परिवर्तन पर केंद्रित है। भौगोलिक शिक्षण सिद्धांत उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करता है जो संदर्भ और वातावरण सीखने की प्रक्रिया को आकार देते हैं।[16]

शैक्षिक मनोविज्ञान के दायरे के बाहर, सीखने की प्रक्रिया के दौरान सीधे मस्तिष्क के कामकाज का निरीक्षण करने की तकनीक, जैसे कि घटना से संबंधित क्षमता और कार्यात्मक चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग, शैक्षिक तंत्रिका विज्ञान में उपयोग की जाती है। मल्टीपल इंटेलिजेंस का सिद्धांत, जहां सीखने को मस्तिष्क में दर्जनों विभिन्न कार्यात्मक क्षेत्रों के बीच बातचीत के रूप में देखा जाता है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी व्यक्तिगत ताकत और किसी विशेष मानव शिक्षार्थी में कमजोरियां होती हैं, लेकिन अनुभवजन्य शोध ने सिद्धांत को पाया है साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं। [3] [4]

शब्द "व्यवहारवाद" जॉन वाटसन (1878-1959) द्वारा गढ़ा गया था। वाटसन का मानना था कि व्यवहारवादी दृष्टिकोण व्यवहार की भविष्यवाणी और नियंत्रण के लक्ष्य के साथ प्राकृतिक विज्ञान की एक विशुद्ध रूप से वस्तुनिष्ठ प्रयोगात्मक शाखा है। [10] [11] साइकोलॉजिकल रिव्यू में एक लेख में, उन्होंने कहा कि, "इसका सैद्धांतिक लक्ष्य व्यवहार की भविष्यवाणी और नियंत्रण है। आत्मनिरीक्षण इसके तरीकों का कोई अनिवार्य हिस्सा नहीं है, न ही इसके डेटा का वैज्ञानिक मूल्य इस पर निर्भर है। तत्परता जिसके साथ वे चेतना के संदर्भ में व्याख्या के लिए खुद को उधार देते हैं।" [12]

कार्यप्रणाली व्यवहारवाद केवल सार्वजनिक घटनाओं, या देखने योग्य व्यवहार की व्याख्या करने के सिद्धांत पर आधारित है। बीएफ स्किनर ने एक अन्य प्रकार के व्यवहारवाद की शुरुआत की जिसे कट्टरपंथी व्यवहारवाद कहा जाता है, या व्यवहार का वैचारिक विश्लेषण, जो निजी घटनाओं की व्याख्या करने के सिद्धांत पर भी आधारित है; विशेष रूप से, सोच और भावनाओं। कट्टरपंथी व्यवहारवाद व्यवहार विश्लेषण का वैचारिक टुकड़ा बनाता है।[15]

निष्कर्ष

व्यवहार विश्लेषण में, सीखना कंडीशनिंग और सामाजिक शिक्षा के माध्यम से एक नए व्यवहार का अधिग्रहण है।

कंडीशनिंग और सीखने के तीन मुख्य प्रकार:

- 1) शास्त्रीय कंडीशनिंग, जहां व्यवहार एक पूर्ववर्ती उत्तेजना के लिए एक प्रतिवर्त प्रतिक्रिया बन जाता है।
- 2) संचालक कंडीशनिंग, जहां पूर्ववर्ती उत्तेजनाओं का परिणाम उन परिणामों से होता है जो एक इनाम (सुदृढीकरण) या दंड के माध्यम से व्यवहार का पालन करते हैं।
- 3) सोशल लर्निंग थ्योरी, जहां मॉडलिंग के बाद व्यवहार का अवलोकन किया जाता है।[17]

इवान पावलोव ने शास्त्रीय कंडीशनिंग की खोज की। उन्होंने देखा कि यदि कुत्ते भोजन के वितरण को एक सफेद लैब कोट या घंटी बजने के साथ जोड़ते हैं, तो वे लार का उत्पादन करते हैं, भले ही भोजन की दृष्टि या गंध न हो। शास्त्रीय कंडीशनिंग सीखने के इस रूप को वही मानती है, चाहे कुत्तों में या मनुष्यों में। [13] ऑपरेशनल कंडीशनिंग इस व्यवहार को इनाम या सजा के साथ पुष्ट करती है। एक इनाम व्यवहार की पुनरावृत्ति की संभावना को बढ़ाता है, एक सजा इसकी संभावना को कम करती है। [14] सामाजिक शिक्षण सिद्धांत व्यवहार का अवलोकन करता है और मॉडलिंग के साथ इसका पालन किया जाता है।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 9, September 2015

ये तीन सीखने के सिद्धांत व्यावहारिक व्यवहार विश्लेषण, व्यवहार विश्लेषण के अनुप्रयोग का आधार बनाते हैं, जो विश्लेषण किए गए पूर्ववृत्त, कार्यात्मक विश्लेषण, प्रतिस्थापन व्यवहार रणनीतियों, और व्यवहार को बदलने के लिए अक्सर डेटा संग्रह और सुदृढीकरण का उपयोग करता है। पुरानी प्रथा को व्यवहार संशोधन कहा जाता था, जिसमें केवल अवधारणात्मक विश्लेषण को स्वीकार किए बिना व्यवहार को बदलने के लिए पूर्ववृत्त और परिणामों का उपयोग किया जाता था; व्यवहार के कार्य का विश्लेषण और नए व्यवहारों की शिक्षा जो समान कार्य करेंगे, व्यवहार संशोधन में कभी भी प्रासंगिक नहीं थे।[18]

व्यवहारवादी सीखने की प्रक्रिया को व्यवहार में बदलाव के रूप में देखते हैं, और व्यवहारिक उद्देश्यों, योग्यता-आधारित सीखने और कौशल विकास और प्रशिक्षण जैसे उपकरणों के माध्यम से वांछित प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने के लिए पर्यावरण की व्यवस्था करते हैं। [15] इस मॉडल से प्रारंभिक गहन व्यवहार हस्तक्षेप, पाठ्यक्रम-आधारित माप और प्रत्यक्ष निर्देश जैसे शैक्षिक दृष्टिकोण सामने आए हैं। [16]

जीन पियागेट द्वारा स्थापित, रचनावाद स्वयं के लिए ज्ञान के निर्माण में शिक्षार्थियों की सक्रिय भागीदारी के महत्व पर जोर देता है। छात्रों के बारे में सोचा जाता है कि वे नवीन जानकारी के अधिग्रहण में उनकी सहायता के लिए पृष्ठभूमि ज्ञान और अवधारणाओं का उपयोग करते हैं।[19] इस तरह की नई जानकारी के पास पहुंचने पर, शिक्षार्थी को अपनी पिछली समझ के साथ संतुलन खोजने का सामना करना पड़ता है, और इसके लिए संज्ञानात्मक संरचना में बदलाव की आवश्यकता होती है। यह परिवर्तन एक बेहतर संज्ञानात्मक स्कीमा बनाने के लिए पिछली और नई जानकारी को प्रभावी ढंग से जोड़ता है। रचनावाद विषयगत और प्रासंगिक दोनों तरह से आधारित हो सकता है। अर्नस्ट वॉन ग्लासर्सफेल्ड द्वारा गढ़े गए कट्टरपंथी रचनावाद के सिद्धांत के तहत, समझ उद्देश्य "वास्तविकता" के विपरीत अनुभव की व्यक्तिपरक व्याख्या पर निर्भर करती है। इसी तरह, प्रासंगिक रचनावाद के विलियम कोबर्न के विचार में अनुभव पर संस्कृति और समाज के प्रभाव शामिल हैं।[20]

संदर्भ

1. इलेरिस, नुड (2004)। सीखने के तीन आयाम। मालाबार, Fla: क्राइगर पब।
2. ^ ओरमरोड, जीन (2012)। मानव शिक्षा (6 वां संस्करण)। बोस्टन: पियर्सन. आईएबीएन 9780132595186.
3. ^ विलिंगम, डेनियल टी.; ह्यूजेस, एलिजाबेथ एम.; डोबोली, डेविड जी। (जुलाई 2011)। "शैलियों के सिद्धांतों को सीखने की वैज्ञानिक स्थिति"। मनोविज्ञान का शिक्षण। 42 (3): 266-271।
4. ^ पश्लर, हेरोल्ड; मैकडैनियल, मार्क; रोहरर, डौग; ब्योर्क, रॉबर्ट ए। (दिसंबर 2008)। "लर्निंग स्टाइल्स: कॉन्सेप्ट्स एंड एप्लिकेशंस" (पीडीएफ)। जनहित में मनोवैज्ञानिक विज्ञान। 9 (3): 105-119।
5. ^ डी.सी. फिलिप्स; जोनास एफ. सोल्टिस (2009)। सीखने पर परिप्रेक्ष्य। शिक्षा के बारे में सोच (5 वां संस्करण)। टीचर्स कॉलेज प्रेस.
6. ^ सिल्वरमैन, एलन। "प्लेटो का मध्य काल तत्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा"। एडवर्ड एन. ज़ाल्टा (सं.) में। द स्टैनफोर्ड इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी (फॉल 2011 संस्करण)।
7. ^ ब्रेन, क्रिस्टीन; मुखर्जी, पेनी (2005). बाल मनोविज्ञान को समझना। चेल्टेनहम: नेल्सन थॉर्न्स। पीपी 56-57।
8. ^ डियरडेन, आरएफ (2012)। शिक्षा में सिद्धांत और अभ्यास (आरएलई एडु के)। ऑक्सन: रूटलेज। पी। 71.
9. ^ शर्मन, पैट्रिस (2012)। जॉन लोके: प्रबुद्धता का दार्शनिक। हंटिंगटन बीच, सीए: शिक्षक निर्मित सामग्री। पी। 26.
10. ^ फिलिप्स, डीसी, सोल्टिस, जेएफ, पर्सपेक्टिव ऑन लर्निंग पृ. 22
11. ^ गुड एंड ब्रॉफी। यथार्थवादी दृष्टिकोण। पी। 155.
12. ^ फिलिप्स, डीसी और सोल्टिस, जेएफ (2009)। सीखने पर परिप्रेक्ष्य (पांचवां)। न्यूयॉर्क: टीचर्स कॉलेज प्रेस. पी। 22.
13. ^ मायर्स, डेविड जी. (2008)। मनोविज्ञान की खोज। न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क: वर्थ। पी। 223.
14. ^ मायर्स, डेविड जी. (2008)। मनोविज्ञान की खोज। न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क: वर्थ। पी। 222.
15. ^ स्मिथ, एमके "लर्निंग थ्योरी, अनौपचारिक शिक्षा का विश्वकोश"। अनौपचारिक शिक्षा का विश्वकोश। 6 जुलाई 2011 को लिया गया।
16. ^ किम, टी और एक्सेलरोड, एस. (2005): "डायरेक्ट इंस्ट्रक्शन: एन एजुकेटर्स गाइड एंड ए प्ली फॉर एक्शन" - द बिहेवियर एनालिस्ट टुडे, 6.(2), पृ. 111

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 9, September 2015

17. ^ क्लेबार्ड, एच. (2004)। वैज्ञानिक पाठ्यक्रम बनाना और सामाजिक दक्षता का उदय। अमेरिकी पाठ्यचर्या के लिए संघर्ष में (पीपी। 77-105)।
18. ^ विलिंगम, डीटी (2009)। छात्रों को स्कूल क्यों पसंद नहीं है? सैन फ्रांसिस्को, सीए: जोसी-बास।
19. ^ ब्राउन, जॉन एस., एलन कोलिन्स, और पॉल डुगिड। "परोक्ष ज्ञान और अध्ययन संस्कृति।" शैक्षिक शोधकर्ता 18.1 (1989): 32-42। वेब।
20. ^ स्फर्ड, ए. (1998, मार्च)। सीखने के लिए दो रूपकों और सिर्फ एक को चुनने के खतरों पर। शैक्षिक शोधकर्ता, 4-13।